मधुसूदन ओझा

डॉ. नारायणशास्त्री काङ्करः

इतस्ततो मेऽन्त्र पुरो, विराजित–पूज्य–सुधियः। प्रणमन् भवतः।
सुम्बधिये पण्डित–श्री मधुसूदनओझा–मैथिल–पादान् हि।।

यहां इधर उधर मेरे सामने विराजे हुए हे पूजनीय सुधियों में आपको प्रणाम करता हुआ पं. श्री मधुसूदन ओझा मैथिल महानुभाव को सम्बोधित करता हूँ।

अयि स्वर्गे विराजित, देवगुरु–बृहस्पति–तुल्य प्रपूजनीय।
पण्डित–प्रवर श्रीयुत–मधुसूदनौझा–मैथिल महानुभाव!।।
पुनः पुनः प्रणौम्यहं, भवदीय–पदारविन्द–युग्मं शिवदम्।
स्व–शिष्योपकर्त्ता त्वं, तत्कल्याणकरोऽपि सदैव वर्त्तसे।।

हे स्वर्ग में विराजित देवगुरु बृहस्पति जी के तुल्य, प्रकृष्टरूप से पूजनीय, पण्डितप्रवर, श्रीयुत मधुसूदन जी ओझा मैथिल महानुभाव! मैं आपके कल्याणदाता चरणकमल के युग्म को पुनःपुनः प्रणाम करता हूँ। (अपने शिष्यों के उपकारकर्त्ता आप सदा ही उनके कल्याणकारी भी हो।

सर्वशास्त्र–पारङ्गत, अयि अशेष–विद्यानिधे मनीषिवर्य।
राजगुरो वन्द्यपाद, मय्यप्यत्र कुरुष्व स्वकृपा–दृष्टिम्।।

हे समस्त शास्त्रों के पारगामी, हे सम्पूर्ण विद्याओं के निधान, हे मनीषिवर! हे वन्दनीय चरण राजगुरुजी! आप मुझ पर भी यहाँ अपनी कृपादृष्टि कर दीजिये।

अयि वेद–वेदाङ्ग–वित्, सौम्य–मूर्त्ते स्मितानन मधुरालापिन्द!
सनमस्यं त्वां नूमरस्मि, तव जयन्ती–महोत्सवेऽस्मिन्नद्यात्र।।

हे वेद–वेदाङ्गों के ज्ञाता, हे सौमय–मूर्त्ति, हे मन्दहास्य से युक्त मुखवाले, हे मधुर भाषणकर्त्ता! आज यहाँ आपकी जयन्ती के महोत्सव पर मैं आपका सनमन स्मरण करता हूँ।

जयन्त्यायोजकानपि, बहु बहु साधु वदामि प्रसन्न–मनसाऽत्र।
येन त्वां नमस्कर्त्तु–मवसरो मिलितोऽयं मे सौवर्णो हि।।

जयन्ती के आयोजकों को भी मैं बहुत बहुत बहुत साधुबोध प्रसन्न मन से मिलता हूँ, जिससे मुझको यह आपको नमस्कार करने के लिये स्वर्णावसर मिला है।

वेदानां सम्बन्धे, भवदीयं चिन्तनमस्त्यभूतपूर्वम्।

संस्कृतमजानन्तोऽपि, तदाधृत्व नैके वेद-विदो जाताः।।

वेदों के सम्बन्ध में आपका चिन्तन अभूतपूर्व है। संस्कृत नहीं जानते हुए भी अनेक लोग इसको आधार बना कर देवों के ज्ञाता बन गये।

प्रारम्भिक-तज्ज्ञानं, विना त्वहं भवच्चिन्तनं नहि बुध्ये।

वेदजिरमप च न वेझि, कथं बुध्येत मया भवच्चिन्तनम्।।

प्रारम्भिक ज्ञान के बिना तो मैं आपके इस चिन्तन को नहीं समझ पा रहा हूँ। मैं वेदभाषा भी नहीं जानता। मेरे द्वारा आपका चिन्तन कैसे समझा जाय?

वेदभाषां संस्कृतमिव, जिज्ञासो परं कोऽपि न वेदाचार्यः।

हन्त! नहि शिक्षयति मां, किं, वेदाचार्योऽपि न जानाति ताम्?।।

मैं संस्कृत की तरह वेदभाषा जानना चाहता हूँ, पर कोई भी वेदाचार्य, दुख है, मुझे नहीं सिखाता है। क्या वेदाचार्य भी उस वेदभाषा को नहीं जानता है?

वैदिकभाषा-ज्ञानं, विनैव वेदाचार्याः कथमुद्भवन्ति?।

किमिदं दर्शं दर्शं, चिमप्युद्वेजसे न? से सद्गुरुदेव!।।

वैदिक भाषा के ज्ञान के बिना ही वेदाचार्य कैसे पैदा हो रहे हैं? क्या यह देख देख कर हे सद्गुरुदेव! आप भी उद्विग्न नहीं होते हो?

वेदाचार्याः सन्तोऽचिकिं न ते संस्कृत इव वैदिक-भाषायाम्।

वदन्ति लिखन्ति गद्ये, पद्ये च कथा-नाटक-महाकाव्यानि?।।

वेदाचार्य होते हुए भी वे संस्कृत की तरह वैदिक भाषा में क्यों नहीं बोलते? और गद्य-पद्य में कथा नाटक महाकाव्य क्यों नहीं लिखते?

वैदिकभाषाभिशा, वर्तन्ते ते नहि कदापीह क्वचित्।

अतएव ते वैदिक-भाषायां न वदन्ति न लिखन्ति कदापि।।

वे वैदिक भाषा के ज्ञाता यहाँ कहीं कभी नहीं है। इसीलिये वे वैदिकभाषा में न कभी बोलते हैं और न लिखते हैं।

किमिद्महमसत्यं भो, गुरुदेव! वदामि? कथयतु सत्य-सत्यम्।

यदि मे कथनमसत्यं, किं न ते मां वेदभाषां शिक्षयन्ति?।।

हे गुरुदेव! क्या यह मै। असत्य कहता हूँ? आप सत्य सत्य कहो। यदि मेरा कथन असत्य है तो वे मुझको वैदिकभाषा क्यों नहीं सिखाते?

आ, मदीय–पूज्य–पिता, पण्डित–श्रीनवलकिशोरकाङ्करः।
वेदभाषा–विदासीत्, स तु तस्यां राष्ट्रवेदमप्यरीरचत्।।

हाँ, मेरे पूज्य पिता पण्डित श्री नवलकिशोर जी काङ्कर वेदभाषा के ज्ञाता थे। उन्होंने तो इस वेदभाषा में राष्ट्रवेद भी रच दिया था।

पश्चातपामि बहु बहु, किं न ततोऽहमशिक्षे वैदिक भासाम्।
अधुनाऽपियो यमां कोऽपि, शिक्षयेद् वेदभाषां संस्कृतमिव भोः।।
तन्महोपकृतिमितां, जन्म–जन्मान्तरेरुवपि न विस्मर्तास्मि।
सत्यमिदमहं वदामि, कोऽपि वेदाचार्यो मामनुगृह्णातु।।

मैं बहुत बहुत पश्चाताप करता हूँ कि मैंने उन पिताजी से वैदिक भाषा क्यों नहीं सीखी? अजी! अब भी जो कोई मुझे संस्कृत की तरह वेदभाषा सिखा दे, उसके उस महान् उपकार को मै। जन्म–जन्मान्तरों में भी नहीं भूलूँगा। यह मैं असत्य नहीं कहता हूँ। कोई भी वेदाचार्य मुझको अनुगृहीत करे और देख ले।

इदं संप्रणति विनिवेद्य, सद्गुरौ चियि मधुसूदनौझा–मैथिल!।
स्व–लेखनीं विरमयामि, विनीतस्त्वदीय–नारायणकाङ्करः।।

हे मधुसूदन ओझा मैथिल जी! सद्गुरु आपको यह प्रणति सहित विशेष निवेदन करके आपका यह विनीत नारायण काङ्कर अपनी लेखनी को विराम देता है।

विद्या–वैभव–भवन,
29–केसर विहार, जगत्पुरा जयपुर– 302017 (राजस्थान)